प्रसाद और निराला भारतीय संस्कृति बोध के प्रतीक - कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा, 21 फरवरी 2021 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय केसाहित्य विद्यापीठ द्वारा संचालित 'हमारे साहित्य निर्माता' शृंखला के अंतर्गत 'संस्कृति बोध का साहित्य : जयशंकर प्रसाद एवं सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के विशेष संदर्भ में' विषय पर दो दिवसीय (19-20 फरवरी 2021) राष्ट्रीय वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए दर्शनशास्त्र के निष्णात विद्वान एवं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि प्रसाद और निराला के संदर्भ में संस्कृति-बोध के साहित्य पर चर्चा एक तरह से संपूर्ण भारतीयता पर चर्चा है। प्रसाद और निराला के काव्य को भारतीय

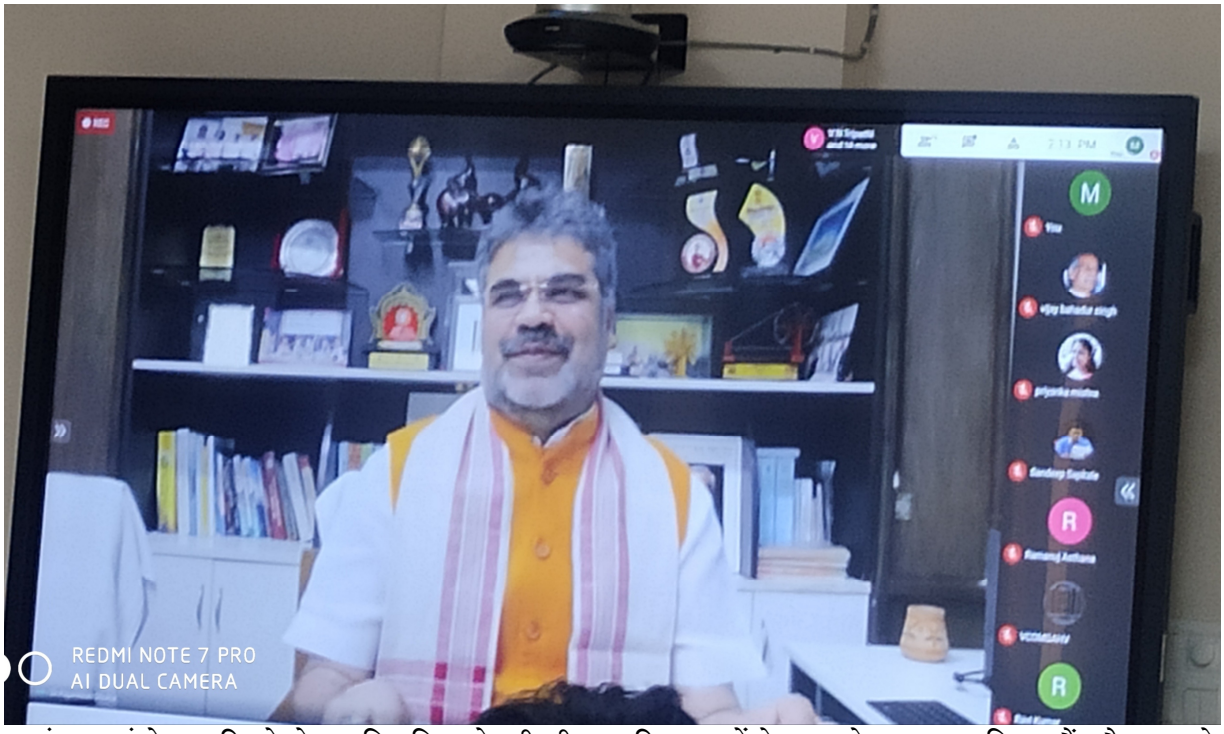

स्वतंत्रता आंदोलन की जो चेतना विकसित हो रही थी, उसकी छाया में देखना पड़ेगा। हम भूमि पुत्र हैं और भूमा के आकांक्षी हैं। उन्होंने कहा कि प्रसाद और निराला भारतीय संस्कृति-बोध के प्रतीक हैं।

इस अवसर पर 'समन्वय' पत्रिका के संपादक, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त ने कहा कि पूरी भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता प्रसाद और निराला की कविताओं में बोलती दिख रही है। जिस साहित्य में संस्कृति का स्वर नहीं बोलता है, उस साहित्य का स्थान विश्व साहित्य में नहीं हो सकता है। मुंबई विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग के अध्यक्ष प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय ने प्रसाद और निराला की समानता की चर्चा की। उन्होंने कहा कि प्रसाद ने अपनी रचनाओं में शैव-दर्शन को आधार बनाया, जो पूर्ण रूप से विरुद्धों का सामंजस्य है। विरुद्धों के इसी सामंजस्य के कारण शिवत्व पैदा होता है। दोनों ही आत्मचेतस है।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष प्रो. अनिल जोशी ने कहा कि निराला, प्रसाद, महादेवी और पंत ये चारों भारतीय सांस्कृतिक स्तंभ का वो बोध है जिसके ऊपर हिंदी कविता या हिंदी साहित्य खड़ा है। प्रसाद के नाटक घटनाओं के नहीं बल्कि चरित्रों के है।

कालीकट विश्वविद्यालय के प्रो. प्रमोद कोवप्रथ ने कहा कि संस्कृति-बोध की चर्चा अपनी ओर देखने की बात करती है। 'वर दे, वीणावादिनी वर दें' कविता के माध्यम से रूढ़ियों और अंधविश्वास के खिलाफ एक विद्रोह की

बात तो 'जागो फिर एक बार' के माध्यम से विश्व मानवतावाद और जागृति की बात और 'तुलसीदास' के माध्यम से सांस्कृतिक ह्रास की बात उन्होंने अपने वक्तव्य में की।

हिंदी साहित्य के वरिष्ठ आलोचक प्रो. विजयबहादुर सिंह ने 'संस्कृति-बोध के संदर्भ में प्रसाद और निराला' विषय पर वक्तव्य देते हुए कहा कि प्रसाद और निराला संस्कृति और संस्कृति-बोध को आसान उदाहरणों से स्पष्ट करने के साथ ही संस्कृति-बोध की विडंबना की भी बात करते हैं। उन्होंने धर्मपाल महोदय की पुस्तक 'भारतीय मानस चित्त और काल' की भी चर्चा की। राष्ट्रकवि गुप्त की एक पंक्ति 'हम कौन थे' का संदर्भ लेते हुए उन्होंने कहा कि

इसके जवाब में गुप्त जी और निराला ने अपना पूरा साहित्य लिख दिया। उन्होंने 'कामायनी' को भारतीय संस्कृति के सुलह का काव्य बताया। 'चंद्रगुप्त' नाटक और 'कामायनी' में एक जगह हुए 'भूमा' के जिक्र के संबंध में विस्तृत चर्चा के साथ उन्होंने कहा कि जो कुछ धरती पर है, वह मरणशील है, इसलिए भूमा में नहीं है। जो अमरणशील है, वह भूमा में है।

प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने विषय प्रस्ताविकी में जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' को छायावाद के प्रवर्तक, उन्नायक और विधायक दैदीप्यमान कवि कहा। प्रसाद और निराला के साहित्य में चिन्मय-चिंतन धारा की झलक आदि से अंत तक दिखाई पड़ती है। 'राम की शक्तिपूजा' की पंक्तियों का संदर्भ देते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति की धारा की चर्चा राम के बगैर पूरी नहीं हो सकती।

कार्यक्रम का संचालन बेबीनार के संयोजक साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अवधेश कुमार ने किया। बेबीनार का आरंभ डॉ. जगदीश नारायण तिवारी द्वारा मंगलाचरण और कुलगीत से किया गया। बेबीनार का सह-संयोजन दूर शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. हरीश अरोड़ा ने किया।

वेबिनार के दूसरे दिन की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल ने की। उन्होंने कहा कि काव्य विधा का वाचक है साहित्य। भारतीय संस्कृति में कालविहीन कर्म होता ही नहीं है। इसलिए भारत का प्रत्येक व्यक्ति कलाकार है। काव्य हमारे यहाँ मंत्र हैं और कवि स्रष्टा ऋषि है। उन्होंने प्रसाद के 'शेर सिंह का शस्त्र समर्पण', 'अशोक की चिंता' आदि कविताओं का उल्लेख अपने उद्बोधन में किया।

हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज के अध्यक्ष प्रो. उदय प्रताप सिंह ने कहा कि लोकजीवन की सजग चेतना ही संस्कृति है। साहित्य संस्कृति का संवाहक होता है। उन्होंने छायावाद को अभिनव संस्कृति का कालखंड बताया।

जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय के आचार्य प्रो. रसाल सिंह ने निराला को राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का कवि बताया। जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चंद्रगुप्त' में अलका द्वारा गाए जानेवाले गीत 'हिमाद्रि तुंग शृंग से' में छायावाद की मूल चेतना निहित होने की बात उन्होंने कही।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के डॉ. मलखान सिंह ने छायावादी साहित्य को व्यक्ति एवं समाज निर्माण करने वाला साहित्य कहा। उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति प्रकृति को स्वतंत्र सत्ता मानने वाली तथा मानवीय चेतना को प्रखर बनाने वाली संस्कृति है। इस क्रम में उन्होंने जयशंकर प्रसाद और निरालाको भारतीय मूल्यों के बीज बोने वाला कवि कहा।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सेवानिवृत्त आचार्य प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी ने कहा कि छायावादी साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति को दृढ़ आधारभूमि प्रदान की। संस्कृति बोध का साहित्य पर बात करते हुए प्रो. त्रिपाठी ने भारतेन्दु तथा मैथिलीशरण गुप्त का भी उल्लेख किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. पूरनचंद टंडन ने प्रसाद के नाटकों पर रंगमंचीयता का अभाव के आक्षेप लगने पर उसके प्रत्युत्तर स्वरूप प्रसाद के ही कथन का उल्लेख किया, जिसमें वे कहते हैं कि मेरे नाटक इक्के-तांगे वालों के लिए नहीं है। साथ ही उन्होंने षोडश संस्कारों का उल्लेख प्रसाद के काव्यों में होने की बात कही। जयशंकर प्रसाद के भारतीय भारतीय भौगोलिक संरचना के ज्ञान की ओर भी हम सभी का ध्यान आकृष्ट कराया। उन्होंने जयशंकर प्रसाद के माध्यम से भारतीय संस्कृति के जीवन-शैली की महत्ता का उल्लेख किया। साथ ही निराला की 'कुकुरमुत्ता' कविता का भी जिक्र किया। समन्वयक की भूमिका निभा रहे बेबिनार के सह-संयोजक प्रो. हरीश अरोड़ा ने आभार ज्ञापित किया।

मराठी

प्रसाद व निराला भारतीय संस्कृति-बोधचे प्रतीक - प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा, 21 फेब्रुवारी 2021 : जयशंकर प्रसाद व सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' यांच्या साहित्यातून भारतीय संस्कृतीचा बोध होतो. दोनही साहित्यिक हे भारतीय संस्कृती-बोधचे प्रतीक आहेत, असे प्रतिपादन महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचे कुलगुरु प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल यांनी केले. ते साहित्य विद्यापीठाच्या वतीने 'आमचे साहित्य निर्माते' या श्रृंखले अंतर्गत 'संस्कृती बोधचे साहित्य : जयशंकर प्रसाद व सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' यांच्या विशेष संदर्भात' या विषयावर दोन दिवसीय (19-20 फेब्रुवारी 2021) राष्ट्रीय बेबीनारच्या उदघाटनप्रसंगी कार्यक्रमाचे अध्यक्ष म्हणून बोलत होते.

यावेळी 'समन्वय' पत्रिकेचे संपादक, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान्चे कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त म्हणाले की प्रसाद आणि निराला यांच्या कवितांमधून संपूर्ण भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता व्यक्त होते. ज्या साहित्यात संस्कृतीचा स्वर नसतो त्या साहित्याचे विश्व साहित्यात स्थान नसते. मुंबई विद्यापीठातील हिंदी विभागाचे अध्यक्ष प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय यांनी प्रसाद व निराला यांच्या साहित्यातील समानतेवर चर्चा केली. केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगराचे उपाध्यक्ष प्रो. अनिल जोशी यांनी निराला, प्रसाद, महादेवी आणि पंत हे साहित्यिक भारतीय सांस्कृतिक स्तंभ असून त्यावर हिंदी कविता व हिंदी साहित्य स्थापन झाले आहे असे सांगितले.

कालीकट विद्यापीठातील प्रो. प्रमोद कोवप्रथ यांनी 'वर दे, वीणावादिनी वर दें' , 'जागो फिर एक बार' या कवितांचा संदर्भ देत 'तुलसीदास' यांच्या काव्यांवर प्रकाश टाकला. वरिष्ठ समीक्षक प्रो. विजयबहादुर सिंह म्हणाले की प्रसाद व निराला हे संस्कृतीला सोप्या उदाहरणातून स्पष्ट करतात व त्यातील विरोधाभासही सांगतात.

प्रास्ताविकातून प्रो. कृष्ण कुमार सिंह यांनी जयशंकर प्रसाद व सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' यांना छायावादाचे प्रवर्तक, उन्नायक कवि संबोधले. ते म्हणाले की प्रसाद व निराला यांच्या साहित्यात चिन्मय-चिंतनाचा प्रवाह आदिपासून अंतापर्यंत दिसून येतो. कार्यक्रमाचे संचालन बेबीनास्चे संयोजक, साहित्य विद्यापीठाचे अधिष्ठाता प्रो. अवधेश कुमार यांनी केले. डॉ. जगदीश नारायण तिवारी यांनी मंगलाचरण सादर केले. कुलगीताने कार्यक्रमाचा प्रारंभ झाला.

समारोपीय सत्र प्रकुलगुरु प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल यांच्या अध्यक्षतेखाली पार पडले. ते म्हणाले की, भारतीय संस्कृतीत कालविहीन कर्माला स्थान नाही. म्हणून भारतातील प्रत्येक व्यक्ती कलाकार आहे. काव्य हे मंत्र तर कवि हा स्रष्टा ऋषी होय. प्रो. शुक्ल यांनी प्रसाद यांच्या 'शेर सिंह का शस्त्र समर्पण', 'अशोक की चिंता' या कवितांना संदर्भ आपल्या भाषणात घेतला.

हिंदुस्तानी अकादमी प्रयागराजचे अध्यक्ष प्रो. उदय प्रताप सिंह म्हणाले की लोकजीवनाची सजग चेतना हिच संस्कृती होय. साहित्य हे संस्कृतीचे संवाहक आहे. छायावाद हा अभिनव संस्कृतीचा कालखंड होय असे ते म्हणाले. जम्मू केंद्रीय विद्यापीठातील प्रो. रसाल सिंह यांनी निराला यांना राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतनेचे कवि संबोधले तर जवाहरलाल नेहरू विद्यापीठातील डॉ. मलखान सिंह यांनी जयशंकर प्रसाद व निराला यांना भारतीय मूल्यांचे बीजारोपण करणारे कवि अशी उपमा दिली. काशी हिंदू विद्यापीठातील सेवानिवृत्त आचार्य प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी म्हणाले की छायावादी साहित्यिकांनी भारतीय संस्कृतीची दृढ़ पृष्ठभूमी तयार केली. त्यांनी भारतेन्दु व मैथिलीशरण गुप्त यांच्याही योगदानाचा उल्लेख केला.

दिल्ली विद्यापीठातील प्रो. पूरनचंद टंडन यांनी जयशंकर प्रसाद यांच्या भारतीय भौगोलिक संरचनेच्या ज्ञानाविषयी माहिती देत भारतीय संस्कृतीतील जीवन-शैलीचे महात्म्य प्रसाद यांच्या संदर्भात व्यक्त केले. वेबिनारचे सह-संयोजक प्रो. हरीश अरोरा यांनी आभार मानले.